BA Part - III

History

By - Dr. Durga Bhawani

B A Part III rd History (Hons) VII th Paper

Date / /
Page

Q. बॉक्सर विद्रोह के कारणों एवं परिणामों पर प्रकाश डालिए।

Ans:- चीन के इतिहास में बॉक्सर विद्रोह का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह विद्रोह ('इ-हो-चुआन' - अद्भुत भ्रातृत्व - Society of Religious Harmony) नामक एक गुप्त संस्था से सम्बन्धित था। इस संस्था के सदस्यों का विश्वास था कि शक्ति व्यक्ति के हाथों में निहित होती है। संभवतः यह इनकी संगठनात्मक शक्ति की महत्ता पर विश्वास का प्रतीक था। इस संस्था के सदस्यों ने चीन की परिस्थिति का अवलोकन करते हुए 1899 ई० के अन्त में विदेशियों को एक विदेशी विरोधी अभियान किया। मुक्का मार कर विदेशियों को बाहर निकालने की भावना के कारण इस अभियान को बॉक्सर विद्रोह कहा जाता है। बॉक्सर विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे —

(1) विदेशी विरोधी भावना — चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का शिकंजा उनकी बन्दरबाँट से स्पष्ट था। 1842, 1858, 1860, 1894-95 में चीन को विदेशी शक्तियों के साथ संघर्ष में पराजय का मुँह देखना पड़ा था, जो चीन का राष्ट्रीय अपमान था। इधर चीन के जिन विद्यार्थियों ने विदेश में जाकर शिक्षा ग्रहण की थी और यूरोपीय देशों की शिक्षा व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, वहाँ की सभ्यता-संस्कृति का अध्ययन किया था, उन्होंने अपने देश की तत्कालीन स्थिति से तुलनात्मक अध्ययन करना शुरू कर दिया। इस अध्ययन में उन्होंने चीन की तुलना में पश्चिमी देशों को अत्यधिक उन्नत स्थिति में पाया। इसके कारणों का अध्ययन करने के बाद इस वर्ग ने इसके लिए पश्चिमी साम्राज्यवादी भावना को दोषी पाया। अतः विदेशियों को देश से बाहर निकालने के प्रयत्न किए गए और सुधार

योजना आन्दोलन शुरू हुआ। विदेशी शक्तियों के प्रभाव से यह योजना असफल हो गयी। अतः अब चीनीयों को विश्वास हो गया कि चीन के विकास में विदेशी शक्तियाँ रोड़ा अटकाने का काम कर रही हैं। अतः चीन में विदेशी विरोधी भावना का बवण्डर उठ खड़ा हुआ। चीन में चारों ओर एक ही नारा गूँजने लगा – "देश को बचाओ, विदेशियों को नष्ट करो"

(2) **चीनी सरकार की निर्बलता** – चीन में शासन कर रही मंचू सरकार ने जिस प्रकार चीन के आंतरिक विद्रोहों का दमन करने के लिए विदेशी शक्तियों का सहारा लिया था, उसने मंचू सरकार की निर्बलता को स्पष्ट कर दिया। सरकार की निर्बलता उस समय और भी स्पष्ट हो गयी जब चीन के 6 प्रांतों में भीषण अकाल पड़ा। यांतू नदी के किनारे के गाँव बाढ़ की चपेट में आ गए और गेहूँ तथा बाजरे की फसल नष्ट हो गयी किन्तु सरकार बाढ़ एवं अकाल पीड़ितों की सहायता करने में पूर्णतः असफल रही।

(3) **चीन पर विदेशी शासन की स्थापना का भय** – जिस समय चीन में साम्राज्यवादी अपने शिकंजे कस रहे थे, उस समय तक भारत, फिलीपाइन एवं बर्मा आदि देशों में पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपना साम्राज्य कायम कर लिया था, इसलिए चीनी इस बात से डरे हुए थे कि कहीं चीन भी प्रत्यक्ष रूप से भारत, आदि देशों की भांति साम्राज्यवादी शक्तियों का गुलाम न बन जाए।

(4) **युरोपीय पूंजीपति वर्ग के प्रतिद्वन्द्वता** – युरोपीय चीन में एक पूंजीपति या व्यापारी की हैसियत से व्यापार करने आए थे, परन्तु उन्होंने धीरे-धीरे चीन को अपने शिकंजे में लेना शुरू कर दिया। यह चीन के हित में ठीक नहीं था। देश के उद्योग धन्धों, खानों, रेलवे आदि पर विदेशी अधिकार

फैल चुका था। चीनी देशभक्त साम्राज्यवादियों की इन चालों का भारत जैसे देश में परिणाम देख चुके थे। अतः यूरोपीय पूंजीपति वर्ग के प्रति उनकी घृणा बढ़ती चली गई।
लेनिन के शब्दों में "The chinese do not hate the European people with whom they have no conflict, they hate European capitalists and the European Government which are subservient to the capitalists." अर्थात "चीनी यूरोपीय जाति से घृणा नहीं रखते थे, उनके साथ उनका कोई झगड़ा नहीं था। वे तो यूरोपीय पूंजीपति वर्ग एवं सरकार के प्रति उनकी घृणा बढ़ती चली गई।"

(5) धार्मिक कारण – बॉक्सर विद्रोह के लिए धार्मिक कारण भी उत्तरदायी था। चीन में यूरोपीय पूंजीपति वर्ग के साथ-साथ ईसाई धर्म-प्रचारक एवं पादरी आए थे और देश में ईसाई मिशनरियों का प्रभुत्व बढ़ता चला गया, इसका प्रमुख कार्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। अपने प्रयत्नों से इन्होंने कई चीनी लोगों को ईसाई धर्मावलम्बी बना दिया था। ईसाई धर्म अपना लिए जाने के बाद इन्हें ईसाई समाज में प्रतिष्ठा भी मिल गई।

ईसाई धर्म मिशनरियों तो चीनी सभ्यता संस्कृति का निरादर करती ही थीं, परन्तु देशी ईसाइयों द्वारा ऐसे कार्य की कल्पना भी चीनियों को नहीं थी। विनायकी महोदय ने लिखा है कि – "The initial outbreak were casued by and directed against native christians even more then foreigners." अर्थात "बॉक्सर विद्रोहियों द्वारा आरंभिक विद्रोह विदेशियों से अधिक स्थानीय ईसाईयों के विरुद्ध किया गया था।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि जब विदेशी विरोधी भावना, चीनी सरकार की निर्बलता, यूरोपीय पूंजीपति वर्ग के प्रति घृणा की भावना के साथ भारत जैसे देशों की भांति चीन में भी विदेशी आधिपत्य का भय एवं ईसाई विरोधी भावना जुड़ गई तो विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही था।

बॉक्सर विद्रोह के परिणाम — बॉक्सर विद्रोह यद्यपि कुचल दिया गया था, परन्तु इसके अत्यन्त दूरगामी परिणाम हुए। क्लाइड के शब्दों में — "बॉक्सर विद्रोह ने चीन की आगामी राजनीति को अत्यन्त प्रभावित किया। इसने मंचू वंश के पतन एवं गण-तंत्र के उदय का मार्ग प्रशस्त कर दिया।" इस विद्रोह के निम्नलिखित परिणाम हुए।

(A) **चीन की जन-हानि** — विद्रोह का आरंभ ईसाइयों एवं धर्म प्रचारकों की हत्या एवं लूटपाट से शुरु हुआ। अतः विदेशी सेनाओं ने विद्रोह के दमन के समय चीन के अनेक नगरों एवं गाँवों को जला दिया। सेना ने अनेक अत्याचार किए और चीनियों को मार डाला।

(B) **चीन पर विदेशी प्रभुत्व का शिकंजा दृढ़ होना** — 7 September 1901 ई० को पश्चिमी देशों में चीन के साथ एक संधि की इतिहास में बॉक्सर प्रोटोकोल के नाम से जाना जाता है। इस संधि में 10 अनुबन्ध थे, जिसने चीनी सरकार को पूर्णतः विदेशियों पर आश्रित कर दिया। अब चीन की स्थिति दयनीय हो गयी। विदेशी राजदूतों ने चीन के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप शुरु कर दिया। चीन में विदेशी सेना रखने की अनुमति ने चीन की अखण्डता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। चीन के संचार माध्यमों एवं व्यापार में विदेशी प्रभुत्व स्थापित हो गया। इतिहास कार लाइट ने ठीक ही लिखा है "China emerged from the Boxer experience with a greatly enhanced debt,

Date / /
Page

added humiliation and in effect, the position of a subject nation!" अर्थात बॉक्सर विद्रोह के परिणामतः के राष्ट्रीय ऋण में वृद्धि हुई, उसका घोर अपमान हुआ और वस्तुतः अब उसकी स्थिति एक अधीनस्त देश की भाँति हो गई।

(c) 1911 ई० की क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार होना – यह ठीक है कि विद्रोह असफल हो गया था, परन्तु इस विद्रोह ने 1911 ई० की चीनी क्रांति की पृष्ठ-भूमि तैयार कर दिया। संधि की शर्तों को जिस खुशी से मंचू सरकार ने स्वीकार किया था, उस से सम्पूर्ण चीन में सरकार की निन्दा होने लगी। विद्रोह के कारणों का मूल था विदेशियों को चीन से हटाना, यह कारण बॉक्सर प्रोटोकोल के बाद और भी स्पष्ट हो गया।

अतः अब चीनी जनता इस विद्रोह का आकलन करने लगी और चीन में विदेशी अधिकार व शोषण के विरुद्ध आक्रोश बढ़ता गया, जिसने 1911 ई० की क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बॉक्सर विद्रोह साम्राज्यवादियों की उस बन्दरबाँट के विरोध में एक आन्दोलन था, जिसे मंचू सरकार की कमजोरियों ने उग्र कर दिया था। विदेशी शक्तियों के हितों को इस विद्रोह ने एक खुली चुनौती दी थी, अतः इसे विदेशी शक्तियों ने अपनी शक्ति का प्रयोग कर कुचल तो दिया, परन्तु असफल हो जाने पर भी इस विद्रोह ने अपने प्रभाव से चीन की समग्र राजनीति को प्रभावित कर दूरगामी परिणामों को जन्म दिया, एक एक प्रतिफल था 1911 ई० की क्रांति।

— X —